दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-X (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____

ई-मेल पता (E-mail address): ____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10 11/09/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

0	8	6	0	5	2	0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): ____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____ टिप्पणी (Remarks): ____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) गदराने तन गोरटी, ऐपन-आड़ लिलार।
हूठयौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार।।

'बिहारी सतसई' में 'बिहारी' ने दैहिक शृंगार व अनुभाव विधान का उत्सव के उपस्थित किया है। इस सामंतवादी अनुभवों की इसी कड़ी का एक सिरा 'नागरता' से भी जुड़ता है जहाँ बिहारी ग्रामीण युवतियों के सौन्दर्य पर मुग्ध होते हुए भी उनका उपहास करने से नहीं चूकते।

ऐसे ही भाव के साथ बिहारी नवयौवना नायिका के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि इस युवती का यौवन अभी अधपका है अर्थात वह अभी किशोरावस्था से युवावस्था में प्रवेश कर रही है तथा माथे पर सुंदर टीका (ऐपन) लगाये हुए है।

परन्तु अपनी ग्रामीणता का परिचय वह इठलाते हुए दे रही है और नायक को लुभा रही है।

सौन्दर्य :- रस - संयोग शृंगार
अलंकार - अनुप्रास
भाषा - परिष्कृत ब्रज भाषा में इठलाइ जैसे पूर्वी प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. छंद- दोहा

विशेष: 1. 'हूठ्यो दे इठलाइ' मुहावरे के प्रयोग से लोकधर्मिता व्यंजित हुई है।

2. 'गँवारि' शब्द तत्कालीन सामंती मानसिकता का द्योतक है जहाँ ग्रामीणों को हेय दृष्टि से देखा जाता था।

3. बिहारी की नागरता का भाव उनके भक्ति-संबंधी पदों में भी दिखता है -

" मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

'निराला' संश्लिष्ट अर्थबोधन व उत्कृष्ट प्रयोगों के कवि हैं। 'राम की शक्तिपूजा' जो कि उनकी सर्वश्रेष्ठ कविताओं में से एक है में वे पुत्री मुक्ति से एक कदम आगे बढ़कर नारी-मुक्ति की प्रस्तावना तो करते ही हैं साथ में नारी को 'प्रिया' का रूप देते हुए यह भी बताते हैं कि कैसे घोर नैराश्य में भी पुलकित क्षणों की स्मृतियाँ राम में उत्साह संचरण करती हैं। ~~और भी~~

जब राम घोर नैराश्य में डूबे हुए थे तभी सीता की स्मृति राम के मस्तिष्क में आती है और जनकपुर का उपवन याद आ जाता है। वह क्षण जब सीता के नयन राम के नयनों से मिले थे। राम उस समय के समस्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वातावरण की स्मृति से भर जाते हैं जहाँ पराग झर रहे थे, किसलय काँप रहे थे और झरना मधुर संगीत की अभिव्यंजना कर रहा था। जानकी की स्मृति राम में उत्साह का संचार करती है।

सौन्दर्य 1. रस- संयोग शृंगार

2. अलंकार - अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा

3. भाषा - तत्समबहुला खड़ी बोली

विशेष : 1. प्रकृति चित्रण में धायावादी सौन्दर्य बोध स्पष्ट है।

2. कविता में गहन अंधकार के बीच दो ही स्थान पर प्रकाश उपस्थित है। 'केवलज्वलती मशाल' और 'अंधकार घन में जैसे विद्युत'।

3 स्मृतिजन्य उत्साह अधिक ऊर्जा ही दे सकता है यह भाव इन पंक्तियों के बाद स्पष्ट होता है जहाँ राम को 'भीमा' की मूर्ति याद आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति-कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला?

'मैथिलीशरण गुप्त' के उद्बोधन काव्य 'भारत-भारती' का एक भाव नवजागरण चेष्टा से जुड़ता है जहाँ कवि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर अतीत का गौरवमयी चित्रण तो करता ही है, आत्मालोचन के भाव से वर्तमान की दुर्दशा पर आँसू भी बहाता है ~~और~~ परन्तु वह यहीं तक सीमित न रहकर दुर्दशा में भी आशा की किरण ढूढ़ लेता है और जनमानस को उत्साहित कर पुनः उच्च व्यवस्था प्राप्त करने का आह्वान करता है।

ऐसे ही भाव के साथ गुप्त भी यहाँ बताते है उन्नति-अवनति का क्रम प्राकृतिक है, जिसकी उन्नति हुई है उसकी ही अवनति हो सकती है। जहाँ सूर्य उदय होगा तभी तो अस्त होगा।

अतः हमें अपनी अवनति को गर्व के साथ से लेते हुए पुनः उन्नति की ओर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयत्नशील होना चाहिए

सौन्दर्य

1. रस - शान्त
2. अलंकार - रूपक, अनुप्रास
3. भाषा तत्समप्रधान होते हुए भी बोधगम्य है क्योंकि अभिधा शब्द-शक्ति का प्रयोग इसे सहज बनाता है।

विशेष

1. नवजागरण की चेतना युक्त ~~आत्म~~ आत्मावलोकन का भाव स्पष्ट है।
2. लय का लगातार प्रवाह गुप्त जी के काव्य की विशेषता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'रामधारी सिंह दिनकर' की कविता 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर का युद्ध-संबंधी दर्शन व्यक्त हुआ है जहाँ वे द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् की तबाही से प्रेरित होकर युद्ध की आवश्यकता पर विचार कर रहे हैं। भीष्म के कथनों के माध्यम से दिनकर युद्ध के ~~की~~ उचित व अनुचित होने के प्रतिमान प्रस्तुत कर रहे हैं भीष्म कहते हैं कि युद्ध का ~~स~~ कारण वह व्यक्ति होता है जो अन्याय करता है। ~~स्वत्व~~ अपने स्वत्व की रक्षा करना पाप कर्म नहीं है। अतः हे युधिष्ठिर तुम स्वयं को दोष देना बन्द करो। ~~जो~~ अन्याय को ललकारना व युद्ध करना पुण्य कर्म है।

सौन्दर्य

1. रस - शान्त
2. ~~अलंकार~~
3. भाषा - तत्समप्रधान खड़ी बोली किंतु अभिधा शब्दशक्ति के कारण बोधगम्यता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बनी हुई है।

विशेष

1. दिनकर का भौतिकवादी, मानववादी चिन्तन व्यक्त हुआ है जहाँ गाँधीवाद के विपरीत आवश्यकता पड़ने पर हिंसा का मार्ग उचित बताया गया है।

2. इसी कविता में अन्यत्र दिनकर त्याग - तप को आवश्यकता पड़ने पर त्यागने का आह्वान करते हैं -

" छीनता हो स्वत्व कोई, और तू
त्याग तप से काम ले यह पाप है
पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण-जलधि समान,
व्यथा से नीली लहरों बीच बिखरते सुख-मणिगण द्युतिमान।

प्रस्तुत पद्यखण्ड 'जयशंकर प्रसाद' के भावप्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के ~~[illegible]~~ से उद्धृत है। यहाँ श्रद्धा मनु को विश्व में व्याप्त पीड़ा व विषमता के रहस्य को समझा रही है।

श्रद्धा कहती है कि विषमता की पीड़ा तो विश्व का, प्रकृति का नियम है। इसी सुख-दुख की श्रृंखला के कारण मनुष्य विकास का मार्ग ढूंढता है और जीवन में समरसता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नरत होता है। समरसता को प्राप्त कर मनुष्य सुख-दुख से परे आनंद की अवस्था को प्राप्त करता है।

सौन्दर्य : 1. रस - शान्त

2. अलंकार - उपमा, रूपक

3. भाषा - तत्सम प्रधान खड़ी बोली जो दार्शनिकता व विचारप्रधानता के कारण क्लिष्ट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हो गई है।

विशेष : 1. 'विषमता की पीड़ा' में आलोचकों ने 'समाजवाद' का प्रभाव आरोपित किया है।

2. प्रकृति की चक्रीय अवधारणा जहाँ युग-युग विकास-विनाश एक के बाद एक आते हैं, भारतीय ~~दर्शनानुकूल~~। परंपरानुकूल है।

3. समरसता के उद्देश्य की स्थापना कर प्रसाद 'प्रत्यभिज्ञा' दर्शन का संप्रेषण कर रहे हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) कबीर की भक्ति-भावना के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'पद्मावत' अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

पद्मावत का मूल्यांकन हिन्दी आलोचना में कई बहसों को जन्म देता रहा है। जहाँ एक ~~xxxx~~ तरफ इसमें ऐतिहासिकता व काल्पनिकता ~~xx~~ पर विभिन्न मत हैं वहीं अन्योक्ति व समासोक्ति को लेकर।

अन्योक्ति वह काव्य होता है जहाँ कवि किसी कहानी का प्रतीकात्मक आधार लेकर किसी अन्य भाव की अभिव्यंजना करता है जहाँ लक्षणा शब्दशक्ति प्रमुख हो जाती है तथा व्यंग्यार्थ ही मुख्य अर्थ होता है वहीं समासोक्ति में वाच्यार्थ व व्यंग्यार्थ समानान्तर चलते हैं और दोनों का ही महत्व बराबर होता है।

पद्मावत को जहाँ आचार्य शुक्ल ने समासोक्ति मानते हुए इसकी कथा को और सूफी भाव को समान महत्व दिया है वहीं कुछ आलोचकों ने इसमें निम्नलिखित पंक्तियों के आधार पर सूफी अर्थ को ही मुख्य अर्थ माना है-

"तन चितउर मन राजा कीन्हा
हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

[illegible]

[illegible]

परन्तु आगे चलकर विजयदेव नारायण साही ने अन्योक्ति व समासोक्ति दोनों विचारों का खण्डन किया है। वे सिद्ध करते हैं कि ~~एक से~~ सूफी का भाव कविता के अधिकांश हिस्से में सही नहीं ~~ठह~~ ठहरता। यदि नागमती को दुनिया धंधा माना जाएगा तो फिर कवि ने नागमती के प्रति जो सम्मान का भाव दिखाया है, उसकी व्याख्या कैसे होगी? अंत में नागमती व पद्मावती साथ में सती होती हैं और स्वर्ग दोनों के जलने से साकार होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वहीं राघव-चेतन की कथा व अन्य कई कथा-सूत्र सूफी भाव के माध्यम से विश्लेषित नहीं हो पाते।

अतः साही सिद्ध करते हैं कि सूफी भाव मुहावरे की तरह ही है उसे विशिष्ट अर्थ देने की आवश्यकता नहीं जायसी प्रेम की अभिव्यक्ति व समन्वय चेतना के साथ पद्मावती की प्रचलित कथा को ही व्यक्त करते हैं न कि किसी सूफी भाव को।

इसी तरह डॉ॰ नित्यानन्द त्रिपाठी ने अन्योक्ति व समासोक्ति से परे इसे 'रोमांचक आख्यान काव्य' का नाम दिया

कहना न होगा कि पद्मावत जैसे महान काव्य एक साथ कई अर्थों को संश्लिष्ट करते हैं और इसी परिप्रेक्ष्य में इसका उचित मूल्यांकन साही ने किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी की काव्यकला शैल्पिक ~~कला~~ कौशल व उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है।

वे ~~जिस~~ जिन परिस्थितियों में रचना कर रहे थे वहाँ कविता का मुख्य उद्देश्य रसिकों को आनंदित कर वाहवाही लूटना था और आनन्द की उपलब्धि तभी होती है जब कविता ऐंद्रिक चित्रों की श्रृंखला खड़ी कर दे। निश्चित है कि बिहारी का बिंब कौशल उनकी शैल्पिक उत्कृष्टता का एक प्रमुख आयाम था।

एक तरफ वे जहाँ कृष्ण-राधा की क्रीड़ाओं के लक्षित बिंब प्रस्तुत करते हैं -

" बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय
सौंह करे भौंहनु हँसे, दैन कहे नट जाय"

वहीं नायक-नायिका की क्रियाओं का संश्लिष्ट चित्र भी उपस्थित करते हैं -

" कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सौं बात"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे उपलक्षित बिंबों की सर्जना करते हुए अमूर्त से अमूर्त विषयों को भी मूर्त कर देते हैं-

" तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस, राग, रति रंग
अनबूड़े बूड़े तिरे जो बूड़े सब अंग"

वे दृश्य बिंबो तक ही नहीं रुकते श्रव्य बिंबों तक भी पहुँचते हैं-

" रणित भृंग घंटावली
झरत दान मधु नीर"

वे सामाजिक कुत्सितताओं के ~~दृश्य बिंब~~ व उपस्थित करते हैं-

" जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम"

भले ही वे पिल्लंर की आधुनिक बिंब संबंधी अवधारणा से परिचित न रहे हों पर उनके बिंब निराला व मुक्तिबोध को भी चुनौती देते प्रतीत होते हैं। इसी कारण ग्रियर्सन को कहना पड़ा कि

" पूरे यूरोप में एक भी कवि बिहारी जैसा नहीं है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुरुक्षेत्र' के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रामधारी सिंह दिनकर की प्रसिद्धि अभिधात्मकता व काव्य की सुस्पष्टता के लिए है जहाँ शैल्पिक कौशल पर अभिव्यक्ति की सहजता को प्रधानता दी जाती है पर दिनकर की उत्कृष्टता है कि वे बोधगम्यता बनाये रखकर भी शिल्प को गौण नहीं बनाते। उनके काव्य कुरुक्षेत्र के शिल्प को निम्नांकित बिन्दुओं में देखा जा सकता है।

(1) <u>काव्यरूप</u> : दिनकर ने स्वयं भूमिका में लिखा है कि जो भाव कुरुक्षेत्र में व्यक्त हुआ है वह बिना युधिष्ठिर और भीष्म का आलंबन लिए भी कहे जा सकते थे परन्तु तब यह कविता 'प्रबन्ध' न बन पाती। वहीं वे यह भी कहते हैं उनकी 'प्रबन्ध' लिखने की कोई निश्चित योजना नहीं थी। निरपेक्ष रूप से देखा जाए तो पँचम और षष्ठ सर्ग पूर्णतः आरोपित प्रतीत होते हैं और प्रबन्धात्मकता का क्षरण करते हैं। अतः इसे 'विचारप्रधान लम्बी कविता' कहना उचित होगा।

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) भाषा : अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग करते हुए दिनकर बोधगम्यता को प्रधानता देते हैं, परन्तु ऐतिहासिक आवरण की रक्षा हेतु तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग भी करते हैं।

" ऊपर सब कुछ शून्य - शून्य है, कुछ भी नहीं गगन में
जो कुछ भी है धर्मराज, इस मिट्टी में जीवन में "

(3) छंद वैविध्य कविता की विभेदक विशेषता है। मात्रिक छन्दों का प्रयोग करते हुए वे कहीं सम तो कहीं विषम मात्राओं का आलम्बन करते हैं। हरिगीतिका व सवैया छन्द प्रमुख है।

(4) बिंब : कवि ने लक्षित व उपलक्षित बिंबों की सृष्टि यत्र-तत्र की है। चूंकि कविता विचार प्रधान है इसलिए बिंबाधिकता संभव नहीं हो पाई है।

(5) प्रतीकात्मकता का प्रयोग भी विरलता है जहाँ भीष्म अपने कथनों से इहलौकिक दर्शन प्रकट करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थ
संख्या के अति
न लिखें।
(Please do
anything e
question n
this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ई इस प्रकार दिनकर ने कुरुक्षेत्र में शिल्प का सफल साधन किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

'गोदान' में 'प्रेमचन्द' जहाँ 'होरी' और 'गोबर' जैसे चरित्रों के माध्यम से ब्रि सामंतवादी व पूँजीवादी व्यवस्था में शोषित की को चित्रित करते हैं वहीं मालती व मेहता के माध्यम से उभरते पूँजीवाद के स्वरूप को स्पष्ट तो करते हैं साथ में अपने विचारों को भी संप्रेषित करते हैं। मालती यहाँ मेहता को नई सभ्यता में धन का महत्व बता रही है।

मालती कहती है कि नये युग में उसी का सम्मान है जिसके पास धन है। धन विद्या, कुल, जाति सबसे बढ़कर है। * मालती खुद अपने माध्यम से सामान्य मनोवृत्ति को उजागर करती है जहाँ चिकित्सक जैसे पुण्य कर्मशील व्यक्ति भी धन के माध्यम पर व्यवहार करते हैं।

विशेष 1. उभरते पूँजीवाद के स्पष्ट संकेत दिख रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. धन पर आधारित आंदोलन के स्वरूप पर व्यंग्य भी किया गया है।

3. प्रेमचन्द वर्गानुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं जहाँ मेहता और मालती जैसे सुशिक्षित चरित्र तत्समप्रधान परिष्कृत भाषा बोलते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundat

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास के हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'कविता क्या है' निबंध में 'आचार्य शुक्ल' कविता की उपयोगिता तथा सामाजिकता को उद्घृत करते हुए स्थापित करते हैं कि काव्य-कर्म गैर उत्पादक होते हुए भी अनुपयोगी नहीं है। इसी तारतम्य में वे कहते हैं —

कविता मनुष्य को निजी स्वार्थ से ऊपर उठा समाजहित हेतु प्रेरित करती है और मार्मिक व शुद्ध अनुभूतियों से भरती है। इस भाव में पहुँचे मनुष्य का हृदय लोकहृदय हो जाता है और वह सबके हित के बारे में सोचने लगता है।

इस तरह कविता हमारे मनोविकारों का परिष्कार करती है।

विश्लेषण:

1. शुक्ल जी कविता के सामाजिक उद्देश्य तय कर रहे हैं तथा रस की लोकमंगलवादी अवधारणा प्रस्तुत कर रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. शुक्ल जी यहाँ शास्त्रवाद' व 'समाजवाद' में संश्लेषण कर रहे हैं।

3. भाषा तत्समप्रधान है जो वैचारिकता के कारण जटिलता धारण करती है।

Copyright – Drishti The Vision Found

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है। इस कठोर प्रत्यक्षवाद की समस्या बड़ी कठिन होती है। गुप्त-साम्राज्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ उसका दायित्व भी बढ़ गया है; पर उस बोझ को उठाने के लिये गुप्त-कुल के शासक प्रस्तुत नहीं, क्योंकि साम्राज्य-लक्ष्मी को वे अब अनायास और अवश्य अपनी शरण आनेवाली वस्तु समझने लगे हैं।

प्रस्तुत गद्यखण्ड राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदर्शवाद के प्रणेता नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक स्कन्दगुप्त से उद्धृत है। यहाँ ~~राष्ट्रनीति~~ दार्शनिकता और कल्पना पर व्यंग्य करते हुए गुप्त साम्राज्य की तात्कालिक स्थिति पर क्षोभ व्यक्त किया जा रहा है

पर्णदत्त कहता है कि राष्ट्रनीति और दार्शनिकता एक-दूसरे से परे हैं। राष्ट्रनीति प्रत्यक्षवाद पर आधारित है, कल्पना पर नहीं। साम्राज्यवृद्धि के साथ ही साम्राज्य-रक्षण का दायित्व बढ़ जाता है परन्तु स्कन्दगुप्त का आकर्षण वैराग्य की तरफ है। गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी साम्राज्य कमाने के पीछे की मेहनत को महत्व नहीं दे रहे हैं।

विशेष : 1. राजनीति और दर्शन व काव्यकर्म जैसी अवधारणाओं में विरोधाभास की जो स्थिति यहाँ दिखती है वही 'आकाश का एक दिन' में प्रियंगुमंजरी -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मल्लिका संवाद में दिखती है।

2. अंग्रेजी में कहावत है – 'With great Power comes greater responsibilities' ऐसा ही भाव यहाँ दिखता है।

3. भाषा तत्सम व तद्भव के संश्लेषण की सुंदरता व बोधगम्यता युक्त है।

4. सूत्र शैली का प्रयोग –
"राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है"

Copyright – Drishti The Vision Found

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) दिव्यो, मैं मृत्यु से भय नहीं मानता...मृत्यु क्या है? अस्तित्व का अन्त! जिसका अस्तित्व नहीं, जिसे अनुभूति नहीं, वह भय भी अनुभव नहीं कर सकता। भय है जीवित रह कर पीड़ा और पराभव सहने में, भय है जीवन भर की पीड़ा और पराभव से। तुम्हें अंक में लेकर समाप्त हो जाने से कौन इच्छा अपूर्ण रह जायेगी? फिर उसमें भय क्या? वह सुखद अस्तित्व का सुखद अन्त है परन्तु मैं युद्ध में पराक्रान्त होकर, पराभूत होकर जीवन भर तिल-तिल कर मरने की कल्पना सहन नहीं कर सकता। जीवन की सार्थकता अधिकार और सामर्थ्य में ही है।

• व्याख्येय पद्यखण्ड जो कि 'यशपाल' कृत ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से उद्धृत है में पृथुसेन युद्ध में प्रस्थान से पहले दिव्या से वार्तालाप करते हुए अपने मृत्यु संबंधी विचार व जीवन के उद्देश्य बता रहा है।

पृथुसेन कहता है कि मैं मृत्यु से नहीं डरता। मेरे जैसे तिरस्कारित व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं तो डर कैसा। मेरी मुझे अगर तुम्हारे प्रेम के साथ जीवनसमाप्त करना पड़े तो कोई कष्ट नहीं। परन्तु पराधीन होकर मरना दुःस्वप्न है। जीवन तभी तक सार्थक है जब तक व्यक्ति स्वाधीन व सामर्थ्यशाली है।

विशेष : 1. ऐतिहासिक आवरण की पुष्टि हेतु तत्समीकृत भाषा का प्रयोग हुआ है

2. मृत्यु व जीवन संबंधी चिन्तन, लेखक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की वैचारिक उत्कृष्टता का उदाहरण है

3. दित्या के प्रति ह्यूसेन के प्रेम की गहराई स्पष्ट होती है।

4. तुलसी भी पराधीनता का ऐसा ही वर्णन करते हैं -

" पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं "

Copyright – Drishti The Vision Found

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) पर प्यार की बेसुध घड़ियाँ, वे विभोर क्षण, तन्मयता के वे पल, जहाँ शब्द चूक जाते हैं, हमारे जीवन में कभी नहीं आये। तुम्हीं बताओ, आये कभी? तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी, एक क्षण के लिये भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देने वाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया।

नई कहानी में एक प्रमुख भाव प्रेम के विचलनशील होने व अंतर्द्वन्द्वता के सत्य का स्वीकार्य है।

'मन्नू भंडारी' द्वारा रचित 'यही सच है' की नायिका दीपा यहाँ संजय और निशीथ के प्रेम की तुलना कर रही है।

जहाँ निशीथ से प्रेम भावनात्मक तथा रोमानी था वहीं संजय से प्रेम आवश्यकता का प्रेम है। दीपा को कभी वह पुलक वह मादकता महसूस नहीं होती जो उसे निशीथ के प्रेम में मिलती थी। जहाँ कुछ न कहते हुए भी बहुत कुछ कह दिया जाता था।

विशेष: 1. 'प्रेम विचलनशील है' इस सत्य को स्वीकारा है।

2. आधुनिक प्रेम भी उपयोगितावादी आधार लिए है - इस भाव का संप्रेषण हुआ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. भाषा चिन्तन प्रधान होने के कारण तत्समीकृत हो गई है।

4. 'डायरी शैली' के प्रयोग के कारण नायिका के मन के अंतर्द्वन्द्वों को स्पष्ट करना सुलभ हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) भारत के संपूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता 'मेरीगंज' जिस रूप में 'मैला आँचल' में व्यक्त हुआ है, वह रूप गांवों की नारकीय स्थिति और जन-चेतना के दुष्प्रभावों का कलात्मक यथार्थ है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'मैला आँचल' उपन्यास का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रेणु ने घोषित रूप से 'मैला आँचल' को आँचलिक उपन्यास कहा है परन्तु सिर्फ आँचलिकता तक सीमित न रहते हुए यह घोषणा भी की है वे 'मेरीगंज' को भारत के समस्त पिछड़े गाँवों का प्रतिनिधि मानकर चल रहे हैं।

और इस उद्देश्य के साथ वे मेरीगंज का सर्वांग विवेचन करते हैं और गाँवों की स्थितियों का मार्मिक चित्र उपस्थित करते हैं।

'मैला' शब्द ही इस बात का द्योतक है कि गाँव की स्थितियाँ स्वर्गीय नहीं नारकीय है। वहाँ व्यक्ति नहीं " इंसान रूपी रिकोलों पर दृष्टि जाती है जहाँ गरीबी का आलम यह है कि " आम की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी" पर लोग अपना जीवन यापन करने को मजबूर हैं।

एक तरफ तो यह भयावह गरीबी वहीं दूसरी तरफ मंदिरों में, मठों में पल रहा अंधविश्वास इस जीवन की एक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सच्चाई है जहाँ 'लक्ष्मी' जैसी अबोध बालिका 'बूढ़े गिद्ध' के हाथों शोषण का शिकार होती है तब भी 'गौरव लक्ष्मी का ही' होता है।

यहाँ शासन भी शोषणतंत्र का एक हिस्सा मात्र है जो तहसीलदार के माध्यम से लोगों की ~~हिस्स~~ जमीन हड़पता है वहीं किसान कर्ज में इस कदर दबा है कि "साल भर की खटनी और महीने भर की मड़नी" के बाद 'खम्हार' का पूरा धान जमींदार के घर जाता है किसान के यहाँ नहीं।

जोखवी काका जैसे लोग भी उसी शोषणवादी सामाजिक व्यवस्था में शीर्ष पर बैठे हैं जिनमें जातिवादी घृणा इस कदर भरी हुई है कि इन्हें "मरा कायस्त भी बिसाता है" और ये मानते हैं और लोगों से मनवाते भी हैं कि डाक्टर लोग ही "देह में सुई भोंककर जहर दे देते हैं"

Copyright – Drishti The Vision Found

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अंधविश्वासों के कारण 'कमली' को पागल होना पड़ता है और गणेश की नानी को मरना पड़ता है। "लड़की की जात बिना दवा के आराम हो जाती है" और "नीच जात लतियाये अच्छा" की भावना उच्चवर्ग में व्याप्त है।

डॉक्टर प्रशान्त जैसे लोग अंततः रोग की जड़ 'गरीबी' व जहालत को ही मानते हैं।

इस प्रकार गाँव की नारकीय स्थिति और जनचेतना के दुष्प्रभावों के कलात्मक यथार्थ का चित्रण रेणु ने प्रभावी रूप से किया है जहाँ लोक-नृत्य व संगीत की उपस्थिति कला-पक्ष की द्योतक है।

परन्तु मैला आँचल यहीं तक नहीं रुकता उसमें उस आशा और विश्वास का भी भाव है जहाँ प्रशान्त "प्यार के पौधे" लहलहाने का प्रण लेता है, और कमली के प्रेम-विवाह तथा लक्ष्मी ~~बालदेव~~ बालदेव प्रसंग में स्त्रीमुक्ति की प्रस्तावना भी है।

इसमें क्रांति की चिंगारी भी है और आनंद का आभास भी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कहना न होगा कि "इसमें शूल भी है, फूल भी हैं, धूल भी। गुलाब भी है, कीचड़ भी है।

लेखक ने सब रंगों का व्यापक संयोजन किया है।

——— x ———

Copyright – Drishti The Vision Founda

(ख) रंगमंचीयता के धरातल पर 'भारत-दुर्दशा' और 'स्कंदगुप्त' की तुलना कीजिये। 15

'भारत-दुर्दशा' व 'स्कन्दगुप्त' की रंगमंचीयता को समझने के लिए भारतेन्दु व प्रसाद के रंगमंचीय दृष्टिकोण को समझना आवश्यक है।

एक तरफ जहाँ भारतेन्दु रंगमंच को नाटक का अनिवार्य अंग मानते थे तथा स्वयं अभिनय भी करते थे। उनके नाटकों का उद्देश्य जन-जन तक अपने संदेश पहुँचाना होता था वहीं प्रसाद का मानना था कि 'रंगमंच नाटक के लिए होना चाहिए, नाटक रंगमंच के लिए नहीं"।

~~जहाँ~~ भारतेन्दु अपने नाटकों में दृश्यों की सहजता का ध्यान रखते हैं, पर्याप्त अभिनय संकेत देते हैं, पात्रों की वेश-भूषा आदि के संकेत भी पर्याप्त देते हैं तथा भाषा का प्रयोग जन-ग्राह्यता को ध्यान में रखकर करते हैं। ~~वहीं प्रसाद के नाटकों~~ में

भारत-दुर्दशा में केवल ५ ही खण्ड हैं और पाँच ही दृश्य। पात्र योजना भी ऐसी है कि दर्शक को तारतम्य बिठाने में कठिनाई न हो।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"A3"

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे 'भारत-दुर्दैव', 'भारत' समेत सभी पात्रों की वेशभूषा बताते हैं -

भारत दुर्दैव - " आधा मुसलमानी व आधा क्रिस्तानी भेष "

इसी प्रकार ध्वनि व प्रकाश योजना के भी पर्याप्त संकेत हैं। मंच पर कुछ वस्तुएँ जुटाकर नाटक का मंचन किया जा सकता है वहीं प्रसाद के 'स्कन्दगुप्त' में 32 दृश्य हैं। दृश्य योजना में भी 'कुंभा में बाढ़ आने' जैसे कठिन दृश्य हैं।

पुनः पात्रों की भाषा दुरूह है जो दर्शक को बाँधे रख पाने में अक्षम है। गीतों की अधिकता हालांकि दोनों ही नाटकों में अधिक है।

प्रसाद के नाटकों के मंचन हेतु समय तो अधिक चाहिए ही, धन भी पर्याप्त चाहिए।

यही कारण है कि जहाँ भारतेन्दु के नाटकों का मंचन हर तरह के रंगमंचों पे बार-बार हुआ वहीं 'स्कन्दगुप्त' जैसे नाटक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मँच की दृष्टि से अभी भी 'चुनौती' बने हुए हैं तथा यथार्थवादी मँच में इन्हे मँचित करना अत्यन्त कठिन है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि The Vision

(ग) दलित-जीवन-चित्रण की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' का मूल्यांकन कीजिये। 15

प्रेमचन्द ने अपने कहानी लेखन की शुरुआत तो गाँधीवादी मूल्यों से प्रभावित आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से की परन्तु 1930 तक आते-आते वे नग्न यथार्थ का चित्रण करने लगे। "उनकी प्रकाश अभ्यस्त आँखें अंधेरा देखने की हिम्मत" जुटाने लगीं।

सद्गति ऐसी ही नग्न यथार्थाभिव्यक्ति की कहानी है। सद्गति का 'दुखी चमार' दलित जीवन का वर्ग-चरित्र है जो धार्मिक कर्मों के लिए उसी ब्राह्मण वर्ग पर आश्रित है जो शोषण व्यवस्था में शीर्ष पर विराजमान है।

सद्गति में दलितों के प्रति ब्राह्मणों की हेय दृष्टि व 'बेगार' का सटीक चित्रण हुआ है।

प्रेमचन्द ब्राह्मणी के माध्यम से उस निर्दयता को उजागर करते हैं जो भूखे दलित को भोजन कराने तक को अपवित्र समझते हैं, आग भी फेंककर देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Founda

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द दलितों के अन्दर व्याप्त उस हीनताग्रंथि तक भी पहुँचते हैं जहाँ दुखी सारता है कि

" बड़े पवित्तर होते हैं ये लोग, तभी तो इतना मान है। और सबके रुपये मारे जाते हैं। भला ब्राह्मण के रुपये कोई मारकर दिखाए "

वे आग से जलने को भी "ब्राह्मण के घर को अपवित्तर" करने का परिणाम मानते हैं।

सद्गति में प्रेमचन्द दलितों की दुर्गति तक ही नहीं रुकते, बल्कि आगे बढ़कर 'गोदान' के माध्यम से उस उभरती हुई दलित अधिकार चेतना को भी शामिल करते हैं जो अम्बेडकर के आने से पैदा हुई।

" गोदान में चमरौने में जाकर कह दिया कि खबरदार कोई लाश न उठाना। ब्राह्मण होंगे अपने घर के "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कहना न होगा कि सद्गति दलित जीवन चित्त का ज्वलंत दस्तावेज है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'गोदान' अपने समय का ही नहीं, आनेवाले समय की भी प्रसव-गाथा है।'- इस मत का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'दिव्या' किसी देश की गौरवगाथा मात्र नहीं है, अपितु आगे की दिशा तलाशती है।' अपने विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल घोषित रूप से मार्क्सवादी थे जो 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' में अपनी आस्था रखते हैं।

स्पष्ट है कि अगर वे ऐतिहासिक उपन्यास लिख रहे हैं तो सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों की तरह गौरवगाथा के लिए नहीं बल्कि के विश्लेषण के लिए। वे कहते हैं-

"इतिहास विश्वास की नहीं विश्लेषण की वस्तु है"

दिव्या मथुरा व सणाल के सांस्कृतिक व कला चित्रण के माध्यम से तथा बौद्ध धर्म के विचारों से भारत के इतिहास के कुछ गौरवशाली अंशों का चित्रण तो करती है परन्तु उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य कुछ और है।

यशपाल "इतिहास के माध्यम से भविष्य के संकेत" तलाशना चाहते हैं।

वे प्रद्युम्न के माध्यम से तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था पर प्रश्न खड़े करते हैं-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

"जन्म का अपराध, यदि वह अपराध है तो इसका मार्जन किस प्रकार संभव है?"

वहीं स्त्रियों के जीवन के माध्यम से व उसके अंतिम निर्णय के माध्यम से स्त्री शोषण के विभिन्न स्वरूपों को उजागर तो करते ही हैं —

" कुलमाता का आदर, कुलमहादेवी का अधिकार व कुलवधू का सम्मान, आर्य पुरुष का प्रश्रय मात्र है "

साथ ही यह घोषणा भी करते हैं कि नारी व पुरुष ~~अन~~ अन्योन्याश्रय हैं और नारी का सम्मान उसकी मुक्ति में ही है।

वे बौद्ध धर्म के माध्यम से वर्ण व्यवस्था के मामले में प्रगतिशील धर्म की भी नारी के मामले में संकीर्ण दृष्टि को उद्घृत करते हैं।

एक हद तक प्रद्युसेन का उदासीन होना इस बात का द्योतक है कि

(कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें)
(Please do not write anything except the question number in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपने भाग्य को धर्म के माध्यम से, कौशल के माध्यम से बदला जा सकता है कहना न होगा कि 'दिव्या' का मुख्य उद्देश्य इस 'इहलौकिक', 'प्रगतिवादी' विचारधारा की स्थापना है जिसमें वास्तविक समानता ही अंतिम लक्ष्य है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' ऐतिहासिक आवरण में लिखा गया नाटक है जो एक साथ तीन समयों में अपनी सार्थकता सिद्ध करता है।

नाटक में उपस्थित काल, नाटक के रचनाकाल व वर्तमान समय में नाटक में उपस्थित भावों की प्रासंगिकता अविच्छिन्न है।

'कालिदास' के माध्यम से लेखक जिस ~~रचना~~ कला व राजनीति के द्वंद्व को व्यक्त कर रहा है वह सार्वकालिक है। आज भी कई लेखकों को आजीविका चलाने हेतु आश्रयदाता के यहाँ कलम को गिरवी रखना पड़ता है। आश्रयदाता राजनीति भी हो सकती है और फिल्म जगत भी।

आज भी राजनीति उसी कुत्सित रूप में विद्यमान है जहाँ भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं। अनुस्वार और अनुनासिक के साथ भावनात्मक कालिदास व मल्लिका का द्वंद्व सार्वकालिक सच है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पीढ़ी अंतराल की अभिव्यक्ति भी नाटक को प्रासंगिक बनाती है। अम्बिका के अनुभव व मल्लिका की भावनात्मकता का द्वंद्व स्थितियों का द्वंद्व है। नाटक सिद्ध करता है कि उम्र बीतने पर कैसे मल्लिका अम्बिका में परिवर्तित होने को बाध्य है।

परन्तु नाटक जिस प्रासंगिकता को प्रमुखता से उठाता है वह है मध्यवर्ग के अनिर्णय की समस्या' जहाँ सार्त्र के अस्तित्ववाद का प्रभाव स्पष्ट है।

कालिदास की ही तरह आज का मानव भी उसी दुविधा से ग्रसित है कि यदि वह प्रासंगिक जीवन जीता है तो धनोपार्जन संभव नहीं और धन के लिए उसे अपने व्यक्तित्व से समझौता करना पड़ता है।

विलोम की ही तरह परिस्थितियों के कारण कई लोग कुंठाओं के शिकार हैं और मल्लिकाएँ अपने जीवन का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

समझौता करने को।

वस्तुतः राकेश की उत्कृष्टता है कि नाटक अपने काल का अतिक्रमण कर ऐसी समस्याओं को उठाता है जो सार्वदेशिक व सार्वकालिक हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामविलास शर्मा के निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' के निहितार्थ पर प्रकाश डालिये। 15

रामविलास शर्मा मार्क्सवादी आलोचना के स्तम्भ हैं और इसी तारतम्य में वे उन आलोचकों की मान्यताओं का खण्डन कर रहे हैं जो तुलसी को वर्ण-व्यवस्था व नारी-शोषण का समर्थक बताकर सामन्तवादी मूल्यों का रक्षक बताते हैं, वे उन आलोचकों का भी खंडन करते हैं जो तुलसी को भारतीय संस्कृति का रक्षक सिद्ध करने में लगे हैं।

शर्मा जी का मानना है कि किसी भी व्यक्ति की प्रगतिशीलता उसके काल व देश के सापेक्ष देखी जानी चाहिए। ऐसे समय में जब कोल-किरातों का आखेट होता था तब तुलसी निषाद, शबरी आदि को जो महत्व देते हैं वह सामंतविरोधी ही है।

वे 'कत बिधि सृजी नारि जग माहीं'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के माध्यम से तुलसी की नारी वर्ग के प्रति प्रगतिशीलता को भी आलोकित करते हैं और बताते हैं कि जो नारी विरोधी कथन हैं वे मुख्यत: प्रतिनायकों के कथन हैं जो तुलसी के विचार नहीं माने जा सकते।

वे कवितावली के माध्यम से तुलसी के जाति-विरोधी मूल्यों को उद्घृत करते हैं जहाँ वे 'मसीत को सोबो' के माध्यम से साम्प्रदायिकता का निषेध करते हैं।

शर्मा जी का निहितार्थ तुलसी की प्रगतिशील चेतना का सम्प्रेषण और तुलसी साहित्य का मूल्यांकन एक अलग दृष्टि से करना था जिसमें वे सफल रहे हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation